اٰيَاتُهَا ۳۰ (۶۷) سُوْرَةُ الْمُلْكِ مَكِّيَّةٌ (۷۷) رُكُوْعَاتُهَا ۲

और २ रूकूअ हैं सूरह मुल्क मक्का में नाज़िल हुई उस में ३० आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

تَبٰرَكَ الَّذِىْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ ز وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ

बाबरकत है वो ज़ात जिस के क़ब्ज़े में सल्तनत है, और वो हर चीज़ पर क़ुदरत

قَدِيْرُ ۝۱ اِلَّذِىْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ

वाला है। जिस ने मौत और ज़िन्दगी पैदा की ताके वो तुम्हें आज़माए

اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ط وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۝۲ الَّذِىْ

के तुम में से कौन अच्छे अमल वाला है। और वो ज़बर्दस्त है, बहोत ज़्यादा बख़्शने वाला है। वो अल्लाह

خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ط مَا تَرٰى فِىْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ

जिस ने ऊपर नीचे सात आसमान बनाए। रहमान के पैदा किए हुए में तुम कोई

مِنْ تَفٰوُتٍ ط فَارْجِعِ الْبَصَرَ لا هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ۝۳

फ़र्क़ नहीं पाओगे। फिर आप निगाह को लौटाइए, क्या आप कोई दराड़ देखते हो?

ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ

फिर आप निगाह को सेहबारा कीजिए, बार बार निगाह आप की तरफ वापस लौट आएगी

خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ۝۴ وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا

ज़लील हो कर इस हाल में के वो थकी हुई होगी। हम ने ही आसमाने दुन्या को मुज़य्यन किया

بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ

चिराग़ों से और हम ने उन चिराग़ों को शैतानों के मारने का ज़रिया बनाया और हम ने शयातीन के लिए

عَذَابَ السَّعِيْرِ ۝۵ وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ

आग का अज़ाब तय्यार कर रखा है। और उन लोगों के लिए जिन्हों ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया जहन्नम का

جَهَنَّمَ ط وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝۶ اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا

अज़ाब है। और वो बुरी जगह है। जब वो उस में डाले जाएंगे, तो जहन्नम

لَهَا شَهِيْقًا وَّهِىَ تَفُوْرُ ۝۷ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ط

का शोर सुनेंगे और वो जोश मार रही होगी। क़रीब है के वो गुस्से की वजह से फट जाए।

کُلَّمَآ اُلۡقِیَ فِیۡہَا فَوۡجٌ سَاَلَہُمۡ خَزَنَتُہَاۤ اَلَمۡ یَاۡتِکُمۡ
जब कभी उस में कोई जमाअत डाली जाएगी, तो जहन्नम के मुहाफ़िज़ फरिशते उन से पूछेंगे क्या तुम्हारे पास कोई डराने

نَذِیۡرٌ ﴿۸﴾ قَالُوۡا بَلٰی قَدۡ جَآءَنَا نَذِیۡرٌ ۬ۙ فَکَذَّبۡنَا
वाला नहीं आया? तो वो कहेंगे क्यूं नहीं! यक़ीनन हमारे पास डराने वाला आया था। तो हम ने झुठलाया

وَ قُلۡنَا مَا نَزَّلَ اللّٰہُ مِنۡ شَیۡءٍ ۚۖ اِنۡ اَنۡتُمۡ اِلَّا
और हम ने कहा के अल्लाह ने कुछ नाज़िल नहीं किया। तुम तो बड़ी गुमराही में

فِیۡ ضَلٰلٍ کَبِیۡرٍ ﴿۹﴾ وَ قَالُوۡا لَوۡ کُنَّا نَسۡمَعُ اَوۡ نَعۡقِلُ
पड़े हो। और वो कहेंगे के अगर हम सुनते या समझते

مَا کُنَّا فِیۡۤ اَصۡحٰبِ السَّعِیۡرِ ﴿۱۰﴾ فَاعۡتَرَفُوۡا بِذَنۡۢبِہِمۡ ۚ
तो हम दोज़खियों में शामिल न होते। फिर वो अपने गुनाह का इक़रार करेंगे।

فَسُحۡقًا لِّاَصۡحٰبِ السَّعِیۡرِ ﴿۱۱﴾ اِنَّ الَّذِیۡنَ یَخۡشَوۡنَ
फिर दोज़खियों पर लानत हो। जो अपने रब से बेदेखे

رَبَّہُمۡ بِالۡغَیۡبِ لَہُمۡ مَّغۡفِرَۃٌ وَّ اَجۡرٌ کَبِیۡرٌ ﴿۱۲﴾ وَ اَسِرُّوۡا
डरते हैं उन के लिए मग़फ़िरत है और बड़ा अज्र है। और तुम बात

قَوۡلَکُمۡ اَوِ اجۡہَرُوۡا بِہٖ ؕ اِنَّہٗ عَلِیۡمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوۡرِ ﴿۱۳﴾
चुपके से कहो या ज़ोर से कहो। बेशक अल्लाह दिलों का हाल खूब जानता है।

اَلَا یَعۡلَمُ مَنۡ خَلَقَ ؕ وَ ہُوَ اللَّطِیۡفُ الۡخَبِیۡرُ ﴿۱۴﴾ ہُوَ ع
क्या वो नहीं जानता जिस ने (उस को) पैदा किया? और वो भेद जानने वाला, बाखबर है। वही

الَّذِیۡ جَعَلَ لَکُمُ الۡاَرۡضَ ذَلُوۡلًا فَامۡشُوۡا فِیۡ مَنَاکِبِہَا
अल्लाह जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को चलने के क़ाबिल बनाया, फिर तुम उस के रास्तों में चलो

وَ کُلُوۡا مِنۡ رِّزۡقِہٖ ؕ وَ اِلَیۡہِ النُّشُوۡرُ ﴿۱۵﴾ ءَاَمِنۡتُمۡ مَّنۡ
और अल्लाह की दी हुई रोज़ी खाओ। और उसी की तरफ ज़िन्दा हो कर उठना है। क्या तुम अमन में हो उस से जो

فِی السَّمَآءِ اَنۡ یَّخۡسِفَ بِکُمُ الۡاَرۡضَ فَاِذَا ہِیَ تَمُوۡرُ ﴿۱۶﴾
आसमान में है के वो ज़मीन में तुम्हें धंसा दे, फिर वो अचानक हरकत करने लगे?

اَمۡ اَمِنۡتُمۡ مَّنۡ فِی السَّمَآءِ اَنۡ یُّرۡسِلَ عَلَیۡکُمۡ
या तुम आसमान वाले से अमन में हो इस से के वो तुम पर तूफान भेज दे

حَاصِبًا ؕ فَسَتَعْلَمُوْنَ كَیْفَ نَذِیْرِ ﴿۱۷﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ

पत्थर का? फिर अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जाएगा के मेरा डराना कैसा था। यक़ीनन उन

الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَیْفَ كَانَ نَكِیْرِ ﴿۱۸﴾ اَوَلَمْ یَرَوْا

लोगों ने भी झुठलाया जो उन से पेहले थे, फिर मेरा इन्कार कैसा था? क्या उन्होंने ने देखा नहीं

وقفة لازم
وقفة منزل ـ
وقفة غفران

اِلَی الطَّیْرِ فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّیَقْبِضْنَ ؔ مَا یُمْسِكُهُنَّ

परिन्दों की तरफ ऊपर, जो पर फैलाए होते हैं और पर कभी सुकेड़ते हैं। उन को कोई सिवाए रहमान

اِلَّا الرَّحْمٰنُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَیْءٍۭ بَصِیْرٌ ﴿۱۹﴾ اَمَّنْ هٰذَا

के थाम नहीं रहा। बेशक वो हर चीज़ को खूब देख रहा है। भला ऐसा कौन है

الَّذِیْ هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ یَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ؕ

जो तुम्हारा लशकर बने, जो तुम्हारी नुसरत करे रहमान के सिवा?

اِنِ الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِیْ غُرُوْرٍ ﴿۲۰﴾ اَمَّنْ هٰذَا الَّذِیْ

काफ़िर तो सिर्फ़ धोके में हैं। भला ऐसा कौन है जो

یَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ رِزْقَهٗ ۚ بَلْ لَّجُّوْا فِیْ عُتُوٍّ

तुम्हें रोज़ी दे अगर अल्लाह अपनी रोज़ी रोक ले? बल्के ये शरारत और बिदकने पर अड़े

وَّنُفُوْرٍ ﴿۲۱﴾ اَفَمَنْ یَّمْشِیْ مُكِبًّا عَلٰی وَجْهِهٖۤ اَهْدٰۤی

हुए हैं। भला जो शख्स चले औंधा अपने मुंह के बल वो ज़्यादा हिदायतयाफ्ता है

اَمَّنْ یَّمْشِیْ سَوِیًّا عَلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ﴿۲۲﴾ قُلْ

या वो आदमी जो सीधे रास्ते पर सीधा चले? आप फरमा दीजिए

هُوَ الَّذِیْۤ اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ

के वही अल्लाह है जिस ने तुम्हें पैदा किया और जिस ने तुम्हारे लिए कान और आँख और दिल

وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِیْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿۲۳﴾ قُلْ هُوَ الَّذِیْ

बनाए। बहोत कम तुम शुक्र अदा करते हो। आप फरमा दीजिए के वही अल्लाह है जिस ने

ذَرَاَكُمْ فِی الْاَرْضِ وَاِلَیْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَیَقُوْلُوْنَ

तुम्हें फैला दिया ज़मीन में और उसी की तरफ तुम इकट्ठे किए जाओगे। और ये केहते हैं के

مَتٰی هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۲۵﴾ قُلْ

ये वादा कब है अगर तुम सच्चे हो। आप फ़रमा दीजिए

اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۪ وَ اِنَّمَآ اَنَا نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿۲۶﴾

के इल्म तो सिर्फ़ अल्लाह के पास है। और मैं तो सिर्फ़ साफ साफ डराने वाला हूँ।

فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِیْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا

फिर जब कुफ्फार वादे को क़रीब आता देखेंगे तो काफ़िरों के चेहरे बिगड़ जाएंगे

وَ قِیْلَ هٰذَا الَّذِیْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿۲۷﴾ قُلْ

और कहा जाएगा के ये वो अज़ाब है जिस को तुम मांगा करते थे। आप फ़रमा दीजिए

اَرَءَیْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِیَ اللّٰهُ وَ مَنْ مَّعِیَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ

के तुम ही बताओ के अगर अल्लाह मुझे और उन लोगों को जो मेरे साथ हैं हलाक कर दे या हम पर रहम करे

فَمَنْ یُّجِیْرُ الْكٰفِرِیْنَ مِنْ عَذَابٍ اَلِیْمٍ ﴿۲۸﴾ قُلْ هُوَ

तो काफिरों को कौन दर्दनाक अज़ाब से बचाएगा? आप फ़रमा दीजिए के वही

الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَ عَلَیْهِ تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ

रहमान है, उसी पर हम ईमान लाए हैं और उसी पर हम ने तवक्कुल किया। फिर जल्द ही

مَنْ هُوَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۲۹﴾ قُلْ اَرَءَیْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ

तुम्हें मालूम हो जाएगा के कौन खुली गुमराही में है। आप फरमा दीजिए के तुम्हारी क्या राए है के अगर

مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ یَّاْتِیْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِیْنٍ ع ﴿۳۰﴾ ع ٢

तुम्हारा पानी गेहराई में चला जाए तो कौन तुम्हारे पास सुथरा पानी लाएगा?

اٰیَاتُهَا ٥٢ (٦٨) سُوْرَةُ الْقَلَمِ مَكِّیَّةٌ (٢) رُكُوْعَاتُهَا ٢

उस में ५२ आयतें हैं सूरह क़लम मक्का में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ﴿﴾

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

نٓ وَ الْقَلَمِ وَ مَا یَسْطُرُوْنَ ﴿۱﴾ مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ

नून। क़लम की क़सम और उस की क़सम जिस को फरिशते लिख रहे हैं। आप के रब की नेअमत की वजह से आप

بِمَجْنُوْنٍ ﴿۲﴾ وَ اِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَیْرَ مَمْنُوْنٍ ﴿۳﴾

मजनून नहीं हैं। और बेशक आप के लिए बेइन्तिहा अज्र है।

وَ اِنَّكَ لَعَلٰی خُلُقٍ عَظِیْمٍ ﴿۴﴾ فَسَتُبْصِرُ وَ یُبْصِرُوْنَ ﴿۵﴾

और यक़ीनन आप अज़ीम अख़लाक़ पर हो। फिर जल्द ही आप भी देख लोगे और ये भी देख लेंगे।

بِاَیِّكُمُ الْمَفْتُوْنُ ۝٦ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ

के तुम में से कौन मचल रहा है। यक़ीनन तेरा रब उस शख़्स को खूब जानता है जो उस के रास्ते

عَنْ سَبِیْلِهٖ ۪ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِیْنَ ۝٧ فَلَا تُطِعِ

से भटक गया है। और खूब जानता है हिदायत पाने वालों को। इस लिए आप झुठलाने वालों

الْمُكَذِّبِیْنَ ۝٨ وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَیُدْهِنُوْنَ ۝٩

की इताअत न कीजिए। वो तो ये चाहते हैं के अगर आप नरमी करें तो वो भी नरमी करेंगे।

وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِیْنٍ ۝١٠ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِیْمٍ ۝١١

और आप केहना न मानिए हर क़सम खाने वाले, ज़लील, ताना देने वाले, चुग़ली को ले कर चलने वाले,

مَّنَّاعٍ لِّلْخَیْرِ مُعْتَدٍ اَثِیْمٍ ۝١٢ عُتُلٍّۭ بَعْدَ ذٰلِكَ

खैर से रोकने वाले, हद से आगे बढ़ने वाले, गुनहगार, सरकश का, उस के बाद वो बेअस्ल

زَنِیْمٍ ۝١٣ اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِیْنَ ۝١٤ اِذَا تُتْلٰى عَلَیْهِ

भी है। इस वजह से के वो माल वाला और बेटों वाला है। जब उस के सामने हमारी आयतें तिलावत

اٰیٰتُنَا قَالَ اَسَاطِیْرُ الْاَوَّلِیْنَ ۝١٥ سَنَسِمُهٗ

की जाती हैं, तो केहता है के ये पेहले लोगों की घड़ी हुई कहानियाँ हैं। अनक़रीब हम उस की नाक को

عَلَى الْخُرْطُوْمِ ۝١٦ اِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَاۤ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ ۚ

दाग़ेंगे। हम ने उन्हें आज़माया जैसा के हम ने बाग़ वालों को आज़माया था।

اِذْ اَقْسَمُوْا لَیَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِیْنَ ۝١٧ وَلَا یَسْتَثْنُوْنَ ۝١٨

जब उन्हों ने क़स्में खाई थीं के उस बाग़ के फल सुबह ज़रूर तोड़ लेंगे। और वो इन्शाअल्लाह नहीं केहते थे।

فَطَافَ عَلَیْهَا طَآئِفٌ مِّنْ رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُوْنَ ۝١٩

फिर उन पर तेरे रब की तरफ से एक बला ने चक्कर लगाया इस हाल में के वो सोए हुए थे।

فَاَصْبَحَتْ كَالصَّرِیْمِ ۝٢٠ فَتَنَادَوْا مُصْبِحِیْنَ ۝٢١

फिर वो कटे हुए खेत की तरह बन गया। फिर वो आपस में एक दूसरे को सुबह के वक़्त पुकारने लगे।

اَنِ اغْدُوْا عَلٰى حَرْثِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰرِمِیْنَ ۝٢٢

के चलो अपने खेत पर अगर तुम्हें खेती काटना है।

فَانْطَلَقُوْا وَهُمْ یَتَخَافَتُوْنَ ۝٢٣ اَنْ لَّا یَدْخُلَنَّهَا

फिर वो चले और वो चुपके चुपके एक दूसरे को केह रहे थे। के आज तुम पर कोई फक़ीर

الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِّسْكِيْنٌ ﴿٢٤﴾ وَّغَدَوْا عَلٰى حَرْدٍ قٰدِرِيْنَ ﴿٢٥﴾

बाग़ में दाखिल न होने पाए। और वो खेती से रोकने पर क़ादिर बन कर सुबह के वक़्त चले।

فَلَمَّا رَاَوْهَا قَالُوْٓا اِنَّا لَضَآلُّوْنَ ﴿٢٦﴾ بَلْ نَحْنُ

फिर जब उन्हों ने वो बाग़ देखा, तो केहने लगे के हम तो रास्ता भूल गए हैं। बल्के हम तो

مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٢٧﴾ قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ

महरूम हो गए। उन में से मोअतदिल शख़्स ने कहा के क्या मैं ने तुम से कहा नहीं था के तुम

لَوْلَا تُسَبِّحُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾

तस्बीह क्यूं नहीं करते? वो बोले के हमारा रब पाक है, यक़ीनन हम ही क़ुसूरवार हैं।

فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ ﴿٣٠﴾ قَالُوْا

फिर उन में से एक दूसरे की तरफ मुतवज्जेह हो कर मलामत करने लगे। वो केहने लगे

يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ ﴿٣١﴾ عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا

हाए हमारी खराबी! यक़ीनन हम ही सरकश थे। उम्मीद है के हमारा रब हमें इस से बेहतर

خَيْرًا مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ﴿٣٢﴾ كَذٰلِكَ

बदले में दे दे, हम अपने रब की तरफ राग़िब हैं। इसी तरह

الْعَذَابُ ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا وقف لازم

अज़ाब आता है। और आखिरत का अज़ाब इस से भी बड़ा है। काश के वो

يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ ع ١

जानते। यक़ीनन मुत्तक़ियों के लिए उन के रब के पास जन्नाते

النَّعِيْمِ ﴿٣٤﴾ اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٥﴾

नईम हैं। क्या हम मुसलमानों को मुजरिमों की तरह बना देंगे?

مَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٦﴾ اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ

तुम्हें क्या हुवा? तुम कैसे फैसले करते हो? क्या तुम्हारे पास किताब है जिस में

تَدْرُسُوْنَ ﴿٣٧﴾ اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ ﴿٣٨﴾ اَمْ لَكُمْ

तुम पढ़ते हो? के तुम्हारे लिए उस में वो है जो तुम पसन्द करोगे? क्या हम से

اَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ اِنَّ لَكُمْ

तुम ने क़स्में ली हैं जो क़यामत के दिन तक चलेंगी? के तुम्हें

لَمَا تَحْكُمُوْنَ ۝٣٩ سَلْهُمْ اَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيْمٌ ۝٤٠

عند المتقدمين ١٢ ع ١٥

ज़रूर मिलेगा जिस का तुम हुक्म दोगे। आप उन से सवाल कीजिए के तुम में से कौन उस का ज़िम्मेदार है?

اَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ ۚ فَلْيَاْتُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ اِنْ كَانُوْا

या उन के शुरका हैं? तो उन्हें चाहिए के अपने शुरका को लाएं अगर वो

صٰدِقِيْنَ ۝٤١ يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ

सच्चे हैं। जिस दिन पिंडली खोली जाएगी और सज्दे

اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝٤٢ خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ

के लिए बुलाया जाएगा, तो वो (सज्दा करने की) ताक़त नहीं रख सकेंगे। उन की निगाहें झुकी हुई होंगी,

تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ

उन पर ज़िल्लत छाई हुई होगी। हालांके इस से पेहले उन्हें सज्दे के लिए बुलाया जाता था

وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ۝٤٣ فَذَرْنِيْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ؕ

जब के (सहीह व) सालिम थे। इस लिए आप मुझे और उस शख्स को छोड़ दीजिए जो इस बात को झुठलाता है।

سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٤٤ وَاُمْلِيْ

अनक़रीब हम उन्हें ढील देंगे इस तरीक़े से के उन्हें पता नहीं चलेगा। और मैं उन्हें

لَهُمْ ؕ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ۝٤٥ اَمْ تَسْئَلُهُمْ اَجْرًا

ढ़ील दूँगा। यक़ीनन मेरी तदबीर बहोत मज़बूत है। क्या आप उन से बदले का सवाल करते हैं,

فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ۝٤٦ اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ

फिर वो तावान की वजह से बोझल हो रहे हैं? या उन के पास ग़ैब है

فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ۝٤٧ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ

के वो लिख लाते हैं? फिर अपने रब के हुक्म की इस्तिक़लाल के साथ राह देखते रहिए और आप मछली वाले

وقف لازم

كَصَاحِبِ الْحُوْتِ ۘ اِذْ نَادٰى وَهُوَ مَكْظُوْمٌ ۝٤٨

पैग़म्बर की तरह न हों, जब के उन्हों ने पुकारा इस हाल में के वो गुस्से से पुर थे।

لَوْلَآ اَنْ تَدٰرَكَهٗ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ

अगर उन्हें अपने रब की नेअमत ने सहारा न दिया होता, तो वो फैंक दिए जाते चटयल मैदान में और

مَذْمُوْمٌ ۝٤٩ فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝٥٠

वो बदहाल होते। फिर उन को उन के रब ने मुन्तखब कर लिया, फिर उन को सुलहा में से बना दिया।

وَاِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ

और ये काफिर तो क़रीब थे के आप को फिसला देते अपनी निगाहों के ज़रिए

لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَ يَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ۝٥١ وقف لازم

जब वो ज़िक्र सुनते हैं और केहते हैं के ये तो मजनून है।

وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝٥٢ ع

हालांके ये कुरआन तो तमाम जहान वालों के लिए नसीहत ही नसीहत है।

اٰيَاتُهَا ٥٢ (٦٩) سُوْرَةُ الْحَآقَّةِ مَكِّيَّةٌ (٧٨) رُكُوْعَاتُهَا ٢

उस में ५२ आयतें हैं सूरह हाक़्क़ा मक्का में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَلْحَآقَّةُ ۝١ مَا الْحَآقَّةُ ۝٢ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحَآقَّةُ ۝٣

सचमुच आने वाली। क्या है सचमुच आने वाली? और आप को मालूम भी है के सचमुच आने वाली क्या चीज़ हे?

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَ عَادٌ ۢ بِالْقَارِعَةِ ۝٤ فَاَمَّا ثَمُوْدُ

क़ौमे समूद और क़ौमे आद ने खड़खड़ाने वाली को झुठलाया। फिर क़ौमे समूद,

فَاُهْلِكُوْا بِالطَّاغِيَةِ ۝٥ وَاَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ

तो वो हलाक की गई ज़ोर की आवाज़ से। और क़ौमे आद तो वो हलाक की गई ठन्डी तूफ़ानी

صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ۝٦ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ

हवा से जो हद से ज़्यादा थी। जिस को अल्लाह ने उन पर मुसख्खर किया सात रात और आठ

اَيَّامٍ ۙ حُسُوْمًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى ۙ كَاَنَّهُمْ

दिन तक लगातार, फिर आप उस में उस क़ौम को देखोगे पछाड़ा हुवा, गोया के वो

اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ۝٧ فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ

उखड़े हुए खजूर के खोखले तने हैं। फिर क्या आप उन में से किसी को बचा हुवा

مِّنْۢ بَاقِيَةٍ ۝٨ وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ

देख रहे हो? और फिरऔन और जो उन से पेहले थे वो और उलट दी जाने वाली बस्तियाँ गुनाह

بِالْخَاطِئَةِ ۝٩ فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً

ले कर आए। फिर उन्हों ने अपने रब के पैग़म्बर की नाफरमानी की, फिर उस ने उन को सख़्ती से

رَّابِیَةً ۝۱۰ اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِی الْجَارِیَةِ ۝۱۱
पकड़ लिया। यक़ीनन जब पानी तुग़यानी में आया, तो हम ने ही तुम्हें कशती में सवार किया।

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِیَهَآ اُذُنٌ وَّاعِیَةٌ ۝۱۲
ताके हम उसे तुम्हारे लिए यादगार बनाएं और उसे याद रखने वाले कान याद रखें।

فَاِذَا نُفِخَ فِی الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ ۝۱۳ وَّحُمِلَتِ
फिर जब सूर में फूंका जाएगा एक ही मरतबा। और ज़मीन

الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ۝۱۴
और पहाड़ उठाए जाएंगे और कूटे जाएं एक ही चोट से।

فَیَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝۱۵ وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِیَ
तो उस दिन वाक़ेअ होने वाली वाक़ेअ हो जाएगी। और आसमान फट जाएगा, फिर वो

یَوْمَئِذٍ وَّاهِیَةٌ ۝۱۶ وَّالْمَلَكُ عَلٰٓی اَرْجَآئِهَا ؕ وَیَحْمِلُ
उस दिन बिल्कुल बूदा होगा। और फरिशते उस के किनारों पर होंगे। और तेरे

عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ یَوْمَئِذٍ ثَمٰنِیَةٌ ۝۱۷ یَوْمَئِذٍ
रब का अर्श उस दिन अपने ऊपर आठ फरिशते उठाए हुए होंगे। उस दिन

تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰی مِنْكُمْ خَافِیَةٌ ۝۱۸ فَاَمَّا مَنْ اُوْتِیَ
तुम्हारी पेशी होगी, तुम्हारा कोई मख्फी राज़ मख्फी नहीं रेह सकेगा। तो जिस को उस का नामअे आमाल उस के

كِتٰبَهٗ بِیَمِیْنِهٖ ۙ فَیَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِیَهْ ۝۱۹
दाएं हाथ में दिया जाएगा, तो वो कहेगा के लो! मेरे इस नामअे आमाल को पढ़ो!

اِنِّیْ ظَنَنْتُ اَنِّیْ مُلٰقٍ حِسَابِیَهْ ۝۲۰ فَهُوَ فِیْ عِیْشَةٍ
बेशक मैं ये अक़ीदा रखता था के मुझे मेरा हिसाब मिलने वाला है। फिर वो खुश्गवार ज़िन्दगी

رَّاضِیَةٍ ۝۲۱ فِیْ جَنَّةٍ عَالِیَةٍ ۝۲۲ قُطُوْفُهَا دَانِیَةٌ ۝۲۳
में होगा। ऊँची जन्नत में होगा। जिस के मेवे झुके हुए होंगे।

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِیْٓئًا ۢ بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِی الْاَیَّامِ
(कहा जाएगा) तुम्हें मुबारक हो, खाओ और पियो उन आमाल की वजह से जो तुम ने पिछले दिनों में

الْخَالِیَةِ ۝۲۴ وَاَمَّا مَنْ اُوْتِیَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ۙ
पेहले किए। और जिस को उस का नामअे आमाल बाएं हाथ में दिया जाएगा,

فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِیْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ ﴿٢٥﴾ وَلَمْ اَدْرِ
वो कहेगा के काश मुझे मेरा नामअे आमाल न मिलता। और मैं न जानता के

مَا حِسَابِيَهْ ﴿٢٦﴾ يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ﴿٢٧﴾
मेरा हिसाब क्या है? ऐ काश के वो मौत ही खात्मा करने वाली होती।

مَآ اَغْنٰى عَنِّیْ مَالِيَهْ ﴿٢٨﴾ هَلَكَ عَنِّیْ سُلْطٰنِيَهْ ﴿٢٩﴾
मेरा माल मेरे कुछ भी काम नहीं आया। मेरी सल्तनत भी मुझ से चली गई।

خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ﴿٣١﴾ ثُمَّ
(कहा जाएगा के) उस को पकड़ो और उस के गले में तौक़ डालो। फिर उस को दोज़ख में दाखिल करो। फिर

فِیْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ﴿٣٢﴾
ऐसी ज़न्जीर में जकड़ो, जिस की लम्बाई सत्तर हाथ है।

اِنَّهٗ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ ﴿٣٣﴾ وَلَا يَحُضُّ
इस लिए के ये अज़मत वाले अल्लाह पर ईमान नहीं रखता था। और मिस्कीन को खाना

عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ﴿٣٤﴾ فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا
देने की तरग़ीब नहीं देता था। तो आज उस का यहाँ कोई दोस्त

حَمِيْمٌ ﴿٣٥﴾ وَّلَا طَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ ﴿٣٦﴾ لَّا يَاْكُلُهٗۤ
नहीं है। और न खाना है सिवाए दोज़खियों के लहू पीप के। सिवाए गुनहगारों के

اِلَّا الْخٰطِـُٔوْنَ ﴿٣٧﴾ فَلَاۤ اُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٣٨﴾ ع ٣٤ ٥
उसे कोई नहीं खाएगा। फिर मैं क़सम खाता हूँ उन चीज़ों की जो तुम देख रहे हो।

وَمَا لَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ﴿٤٠﴾ وَّمَا هُوَ
और उन चीज़ों की जो तुम देख नहीं रहे। बेशक ये इज्ज़त वाले फरिशते का क़ौल है। और ये किसी

بِقَوْلِ شَاعِرٍ ؕ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾ وَلَا بِقَوْلِ
शाइर का कलाम नहीं है। बहोत कम तुम लोग ईमान लाते हो। और किसी काहिन का कलाम भी

كَاهِنٍ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٢﴾ تَنْزِيْلٌ
नहीं है। बहोत कम तुम नसीहत हासिल करते हो। (बल्के ये क़ुरआन तो)

مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ
रब्बुल आलमीन की तरफ से उतारा गया है। और अगर ये नबी भी हमारे ऊपर कोई बात

الْاَقَاوِيْلِ ﴿٤٤﴾ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ﴿٤٥﴾
बना लेते। तो हम उस को भी कूव्वत से पकड़ लेते।

ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ
फिर हम उस की रगे जान काट डालते। फिर तुम में से कोई भी उसे

عَنْهُ حٰجِزِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَاِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾
बचा न सकता। और यक़ीनन ये नसीहत है मुत्तक़ियों के लिए।

وَ اِنَّا لَنَعْلَمُ اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ ﴿٤٩﴾ وَ اِنَّهٗ
और यक़ीनन हम जानते हैं के तुम में से कुछ झुठलाने वाले हैं। और बेशक ये कुरआन

لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٠﴾ وَ اِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٥١﴾
काफ़िरों के लिए हसरत है। और ये कुरआन हक़्कुल यक़ीन है।

ع
فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٥٢﴾
फिर आप अपने अज़मत वाले रब के नाम की तस्बीह कीजिए।

اٰيَاتُهَا ٤٤ (٧٠) سُوْرَةُ الْمَعَارِجِ مَكِّيَّةٌ (٧٩) رُكُوْعَاتُهَا ٢
उस में ४४ आयतें हैं सूरह मआरिज मक्का में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ﴿١﴾ لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ
एक सवाल करने वाले ने सवाल किया ऐसे अज़ाब का जो काफ़िरों के लिए वाक़ेअ होने वाला है, जिसे

لَهٗ دَافِعٌ ﴿٢﴾ مِّنَ اللّٰهِ ذِى الْمَعَارِجِ ﴿٣﴾ تَعْرُجُ
कोई दफा नहीं कर सकता। अल्लाह की तरफ से, जो सीढ़ियों का मालिक है। फरिश्ते और

الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِىْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ
रूह सीढ़ियों से चढ़ कर उस के पास जाते हैं, (अज़ाब वाक़ेअ होगा) ऐसे दिन में जिस की मिक़दार

خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ﴿٤﴾ فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا ﴿٥﴾
पचास हज़ार बरस है। फिर आप अच्छी तरह सब्र कीजिए।

اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا ﴿٦﴾ وَّ نَرٰىهُ قَرِيْبًا ﴿٧﴾ يَوْمَ
बेशक ये उस को दूर समझ रहे हैं। और हम उसे क़रीब देख रहे हैं। जिस दिन

تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ﴿۸﴾ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ﴿۹﴾

आसमान पिघले हुए ताँबे के मानिन्द हो जाएगा। और पहाड़ ऊन की तरह हो जाएंगे।

وَلَا يَسْـَٔلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ﴿۱۰﴾ يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ؕ يَوَدُّ

और कोई दोस्त किसी दोस्त को पूछेगा भी नहीं। हालांके वो उन्हें दिखाए जाएंगे। मुजरिम

الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِیْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍۭ بِبَنِيْهِ ﴿۱۱﴾

चाहेगा के काश के वो उस दिन के अज़ाब से बचने के लिए फ़िदये में दे दे अपने बेटों को।

وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيْهِ ﴿۱۲﴾ وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِیْ تُـْٔوِيْهِ ﴿۱۳﴾

और अपनी बीवी को और अपने भाई को। और अपने उस कुम्बे को जिस में वो रेहता था।

وَمَنْ فِی الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ ثُمَّ يُنْجِيْهِ ﴿۱۴﴾ كَلَّا ؕ

और उन तमाम को जो ज़मीन में हैं सब को फिदये में दे दे, फिर वो अपने को बचा ले। हरगिज़ नहीं।

اِنَّهَا لَظٰی ﴿۱۵﴾ نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰی ﴿۱۶﴾ تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ

यक़ीनन ये तो भड़कती हुई आग होगी। जो चमड़ी भी खींच लेगी। वो आग पुकारेगी उस को जिस ने पीठ फेरी

وَتَوَلّٰی ﴿۱۷﴾ وَجَمَعَ فَاَوْعٰی ﴿۱۸﴾ اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ

और ऐराज़ किया। और जिस ने माल जमा किया, फिर उस ने हिफाज़त से रखा। यक़ीनन इन्सान कमहिम्मत पैदा

هَلُوْعًا ﴿۱۹﴾ اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًا ﴿۲۰﴾ وَّاِذَا مَسَّهُ

किया गया है। जब उसे मुसीबत पहोंचती है, तो फरयादी बन जाता है। और जब उसे नेअमत पहोंचती है

الْخَيْرُ مَنُوْعًا ﴿۲۱﴾ اِلَّا الْمُصَلِّيْنَ ﴿۲۲﴾ الَّذِيْنَ هُمْ

तो रोकने वाला बन जाता है। मगर वो नमाज़ पढ़ने वाले। जो अपनी नमाज़ पर

عَلٰی صَلَاتِهِمْ دَآئِمُوْنَ ﴿۲۳﴾ وَالَّذِيْنَ فِیْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ

मुदावमत करते हैं। और जिन के मालों में मुक़र्रर किया

مَّعْلُوْمٌ ﴿۲۴﴾ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ﴿۲۵﴾ وَالَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ

हुवा हक़ है। मांगने वाले के लिए और फक़ीर के लिए। और जो हिसाब के

بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿۲۶﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ

दिन को सच्चा बतलाते हैं। और जो अपने रब के अज़ाब से

مُّشْفِقُوْنَ ﴿۲۷﴾ اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَاْمُوْنٍ ﴿۲۸﴾

डरते हैं। यक़ीनन उन के रब का अज़ाब बेखौफ रेहने की चीज़ नहीं है।

وَالَّذِيۡنَ هُمۡ لِفُرُوۡجِهِمۡ حٰفِظُوۡنَ ۝٢٩ اِلَّا
और जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। मगर

عَلٰٓى اَزۡوَاجِهِمۡ اَوۡ مَا مَلَكَتۡ اَيۡمَانُهُمۡ فَاِنَّهُمۡ غَيۡرُ
अपनी बीवियों से या अपनी बांदियों से, इस लिए के उन पर उस में कोई

مَلُوۡمِيۡنَ ۝٣٠ فَمَنِ ابۡتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
मलामत नहीं। लेकिन जो उस के अलावा को तलब करेगा, तो यही लोग हद से आगे बढ़ने

الۡعٰدُوۡنَ ۝٣١ وَالَّذِيۡنَ هُمۡ لِاَمٰنٰتِهِمۡ وَ عَهۡدِهِمۡ
वाले हैं। और जो अपनी अमानतों और अपने अहद को

رٰعُوۡنَ ۝٣٢ وَالَّذِيۡنَ هُمۡ بِشَهٰدٰتِهِمۡ قَآئِمُوۡنَ ۝٣٣
निबाहते हैं। और जो अपनी गवाहियों पर क़ाइम रेहते हैं।

وَ الَّذِيۡنَ هُمۡ عَلٰى صَلَاتِهِمۡ يُحَافِظُوۡنَ ۝٣٤ اُولٰٓئِكَ
और जो अपनी नमाज़ की पाबन्दी करते हैं। उन को

فِىۡ جَنّٰتٍ مُّكۡرَمُوۡنَ ۝٣٥ فَمَالِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا
जन्नतों में ऐज़ाज़ दिया जाएगा। फिर काफिरों को क्या हो गया

قِبَلَكَ مُهۡطِعِيۡنَ ۝٣٦ عَنِ الۡيَمِيۡنِ وَعَنِ الشِّمَالِ
के आप की तरफ दौड़े चले आते हैं। दाईं तरफ से और बाईं तरफ़ से जमाअत दर जमाअत।

عِزِيۡنَ ۝٣٧ اَيَطۡمَعُ كُلُّ امۡرِئٍ مِّنۡهُمۡ اَنۡ يُّدۡخَلَ جَنَّةَ
क्या उन में से हर शख्स ये लालच रखता है के उसे जन्नते नईम में दाखिल किया

نَعِيۡمٍ ۝٣٨ كَلَّا ؕ اِنَّا خَلَقۡنٰهُمۡ مِّمَّا يَعۡلَمُوۡنَ ۝٣٩
जाएगा? हरगिज़ नहीं! यक़ीनन हम ने उन को पैदा किया है उस से जिस को ये जानते हैं।

فَلَآ اُقۡسِمُ بِرَبِّ الۡمَشٰرِقِ وَالۡمَغٰرِبِ اِنَّا لَقٰدِرُوۡنَ ۝٤٠
फिर मैं मशरिक़ों और मग़रिबों के रब की क़सम खाता हूँ के यक़ीनन हम इस पर क़ादिर हैं

عَلٰٓى اَنۡ نُّبَدِّلَ خَيۡرًا مِّنۡهُمۡ ۙ وَمَا نَحۡنُ بِمَسۡبُوۡقِيۡنَ ۝٤١
के उन से बेहतर को बदले में ले आएं। और ये हम से भाग कर आगे नहीं जा सकते।

فَذَرۡهُمۡ يَخُوۡضُوۡا وَ يَلۡعَبُوۡا حَتّٰى يُلٰقُوۡا يَوۡمَهُمُ
इस लिए आप उन को छोड़ दीजिए के वो लगे रहें और खेलें यहाँ तक के वो मिलें उन के उस दिन से

الَّذِیْ یُوْعَدُوْنَ ﴿۴۲﴾ یَوْمَ یَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ
जिस से उन्हें डराया जा रहा है। जिस दिन वो क़ब्रों से निकल रहे होंगे

سِرَاعًا كَاَنَّهُمْ اِلٰی نُصُبٍ یُّوْفِضُوْنَ ﴿۴۳﴾ خَاشِعَةً
तेज़ी से गोया के वो निशानों की तरफ तेज़ दौड़ रहे हैं। उन की नज़रें

اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ ذٰلِكَ الْیَوْمُ الَّذِیْ
झुकी हुई होंगी, उन पर ज़िल्लत छाई हुई होगी। ये वो दिन है जिस से

كَانُوْا یُوْعَدُوْنَ ﴿۴۴﴾
उन्हें डराया जा रहा है।

رُكُوْعَاتُهَا ۲ (۷۱) سُوْرَةُ نُوْحٍ مَّكِّیَّةٌ (۷۱) اٰیَاتُهَا ۲۸
और २ रूकूअ हैं सूरह नूह मक्का में नाज़िल हुई उस में २८ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِنَّاۤ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰی قَوْمِهٖۤ اَنْ اَنْذِرْ قَوْمَكَ
हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को उन की क़ौम की तरफ़ भेजा के आप अपनी क़ौम को डराइए

مِنْ قَبْلِ اَنْ یَّاْتِیَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۱﴾ قَالَ یٰقَوْمِ
इस से पेहले के उन के पास दर्दनाक अज़ाब आ जाए। नूह (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया ऐ मेरी

اِنِّیْ لَكُمْ نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿۲﴾ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ
क़ौम! बेशक मैं तुम्हारे लिए साफ साफ डराने वाला हूँ। के अल्लाह की इबादत करो और उस से डरो

وَاَطِیْعُوْنِ ﴿۳﴾ یَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَ یُؤَخِّرْكُمْ
और मेरा केहना मानो। तो अल्लाह तुम्हारे लिए तुम्हारे गुनाह बख्श देगा और तुम्हें एक वक़्ते मुक़र्ररा

اِلٰۤی اَجَلٍ مُّسَمًّی ؕ اِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ اِذَا جَآءَ لَا یُؤَخَّرُ ۘ
तक मोहलत देगा। यक़ीनन अल्लाह की मुक़र्रर की हुई मुद्दत जब आ जाती है, तो फिर मुअख़्ख़र नहीं की जाती।

لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۴﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّیْ دَعَوْتُ قَوْمِیْ
काश के तुम जानते। नूह (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया ऐ मेरे रब! यक़ीनन मैं ने मेरी क़ौम

لَیْلًا وَّنَهَارًا ﴿۵﴾ فَلَمْ یَزِدْهُمْ دُعَآءِیْۤ اِلَّا فِرَارًا ﴿۶﴾
को रात और दिन बुलाया। तो वो मेरे बुलाने पर और ज़्यादा ही भागते रहे।

وَاِنِّیْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوْٓا اَصَابِعَهُمْ

और जब भी मैं ने उन को बुलाया ताके आप उन की मग़फिरत करें, तो उन्हों ने अपनी उंगलियाँ

فِیْٓ اٰذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِیَابَهُمْ وَاَصَرُّوْا وَاسْتَكْبَرُوا

अपने कानों में ठोंस लीं और अपने कपड़े ओढ़ लिए और उन्हों ने ज़िद की और बहोत

اسْتِكْبَارًا ۚ﴿۷﴾ ثُمَّ اِنِّیْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۙ﴿۸﴾ ثُمَّ اِنِّیْٓ

ज़्यादा तकब्बुर किया। फिर मैं ने उन को खुल्लम खुल्ला दावत दी। फिर मैं ने

اَعْلَنْتُ لَهُمْ وَاَسْرَرْتُ لَهُمْ اِسْرَارًا ۙ﴿۹﴾ فَقُلْتُ

उन को अलानिया दावत दी, फिर मैं ने उन को चुपके चुपके दावत दी। फिर मैं ने कहा के

اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۙ﴿۱۰﴾ یُّرْسِلِ السَّمَآءَ

तुम अपने रब से मग़फ़िरत तलब करो। यक़ीनन वो बहोत ज़्यादा बख़्शने वाला है। वो आसमान को तुम पर

عَلَیْكُمْ مِّدْرَارًا ۙ﴿۱۱﴾ وَّیُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِیْنَ

बरसता हुवा छोड़ेगा। और तुम्हारी इमदाद करेगा मालों और बेटों के ज़रिए

وَیَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّیَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ؕ﴿۱۲﴾ مَا لَكُمْ

और तुम्हारे लिए बाग़ात बनाएगा और तुम्हारे लिए नेहरें बनाएगा। तुम्हें क्या हुवा के

لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ۚ﴿۱۳﴾ وَقَدْ خَلَقَكُمْ اَطْوَارًا ﴿۱۴﴾

तुम अल्लाह के लिए अज़मत का अक़ीदा नहीं रखते? हालांके उस ने तुम्हें तौर दर तौर पैदा किया है।

اَلَمْ تَرَوْا كَیْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۙ﴿۱۵﴾

क्या तुम ने देखा नहीं के कैसे अल्लाह ने ऊपर नीचे सात आसमान पैदा किए?

وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِیْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿۱۶﴾

और उन में चाँद को नूरानी बनाया और सूरज को रोशन बनाया।

وَاللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ نَبَاتًا ۙ﴿۱۷﴾ ثُمَّ یُعِیْدُكُمْ

और अल्लाह ने तुम्हें ज़मीन से उगाया। फिर वो तुम्हें ज़मीन में दोबारा

فِیْهَا وَیُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا ﴿۱۸﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ

लौटाएगा, फिर वो तुम्हें क़ब्रों से निकालेगा। और अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन को

ع ١ الْاَرْضَ بِسَاطًا ۙ﴿۱۹﴾ لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ۧ﴿۲۰﴾

बिछौना बनाया। ताके तुम उस के कुशादा रास्तों में चलो।

قَالَ نُوْحٌ رَّبِّ اِنَّهُمْ عَصَوْنِىْ وَاتَّبَعُوْا مَنْ

नूह (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब! उन्हों ने मेरी नाफरमानी की और वो उन के पीछे चले जिन

لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهٗ وَ وَلَدُهٗۤ اِلَّا خَسَارًا ۚ﴿۲۱﴾ وَ مَكَرُوْا

के माल और जिन की औलाद उन को ज़्यादा नहीं करती मगर खसारे में। और उन्हों ने

مَكْرًا كُبَّارًا ۚ﴿۲۲﴾ وَقَالُوْا لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ

बड़ा ज़बर्दस्त मक्र किया। और उन्हों ने कहा के तुम हरगिज़ मत छोड़ो अपने माबूदों को

وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَّلَا سُوَاعًا ۙ وَّلَا يَغُوْثَ وَيَعُوْقَ

और तुम हरगिज़ मत छोड़ो वद्द और सुवाअ और यगूस और यऊक़

وَنَسْرًا ۚ﴿۲۳﴾ وَقَدْ اَضَلُّوْا كَثِيْرًا ۚ وَلَا تَزِدِ

और नस्र को। और तहक़ीक़ के उन्हों ने बहोत सों को गुमराह किया। और (या रब!) ज़ालिमों

الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا ضَلٰلًا ﴿۲۴﴾ مِمَّا خَطِيْٓــٰٔتِهِمْ اُغْرِقُوْا

की गुमराही और बढ़ाइए। अपने गुनाहों की वजह से वो ग़र्क़ किए गए,

فَاُدْخِلُوْا نَارًا ۙ فَلَمْ يَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ

फिर वो आग में दाखिल किए गए। फिर अपने लिए उन्हों ने अल्लाह के सिवा कोई मददगार भी

اللّٰهِ اَنْصَارًا ﴿۲۵﴾ وَقَالَ نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ

नहीं पाया। और नूह (अलैहिस्सलाम) ने कहा के ऐ मेरे रब! तू ज़मीन पर काफिरों का

عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ﴿۲۶﴾ اِنَّكَ

एक घर भी बसता हुवा मत छोड़। इस लिए के

اِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوْٓا اِلَّا فَاجِرًا

अगर तू उन को छोड़ेगा तो वो तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और वो नहीं जनेंगे मगर फाजिर

كَفَّارًا ﴿۲۷﴾ رَبِّ اغْفِرْ لِىْ وَلِوَالِدَىَّ وَلِمَنْ دَخَلَ

काफिर ही को। ऐ मेरे रब! तू मेरी मग़फ़िरत कर दे और मेरे वालिदैन की और उस शख़्स की जो मेरे

بَيْتِىَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَلَا تَزِدِ

घर में मोमिन बन कर आए और ईमान वाले मर्दों की और मोमिन औरतों की। और तू ज़ालिमों को मत

الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا تَبَارًا ۧ﴿۲۸﴾ النصف ع ۲ ۸ ۱۰

बढ़ा मगर हलाकत में।

اٰیَاتُهَا ٢٨ (٧٢) سُوْرَةُ الْجِنِّ مَكِّيَّةٌ (٤٠) رُكُوْعَاتُهَا ٢

उस में २८ आयतें हैं सूरह जिन मक्का में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

قُلْ اُوْحِیَ اِلَیَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا

आप फ़रमा दीजिए के मेरी तरफ ये वही किया गया है के चन्द जिन्नात ने कुरआन सुन लिया, तो वो केहने लगे

اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ۝١ يَّهْدِیْٓ اِلَی الرُّشْدِ

के यक़ीनन हम ने एक अजीब कुरआन सुना है। जो नेकी की तरफ़ रहनुमाई करता है,

فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ۝٢ وَّاَنَّهٗ

तो हम उस पर ईमान ले आए। और हम अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं ठेहराएंगे। और ये के

تَعٰلٰی جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۝٣

हमारे रब की ऊँची शान है, उस ने न कोई बीवी बनाई और न औलाद बनाई।

وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَی اللّٰهِ شَطَطًا ۝٤

और हम में से बेवक़ूफ अल्लाह पर (किज़्ब में भी) बहोत दूर की केहते रहे।

وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَی اللّٰهِ

और ये के हम ने गुमान किया के इन्सान और जिन अल्लाह पर हरगिज़ झूठ नहीं

كَذِبًا ۝٥ وَّاَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ

बोलेंगे। और ये के इन्सानों में से कुछ लोग पनाह तलब करते थे

بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ۝٦ وَّاَنَّهُمْ ظَنُّوْا

मर्द जिन्नात की, तो उन्हों ने उन जिन्नात का गुरूर और बढ़ा दिया। और ये के उन्हों ने गुमान किया

كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۝٧ وَّاَنَّا لَمَسْنَا

जैसा के तुम ने गुमान किया के अल्लाह किसी को (ज़िन्दा कर के) हरगिज़ नहीं उठाएगा। और ये के हम ने आसमान

السَّمَآءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا وَّشُهُبًا ۝٨

को टटोला, तो हम ने उस को भरा हुवा पाया मज़बूत चौकीदारों से और अंगारों से।

وَّاَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ؕ فَمَنْ

और ये के हम वहाँ पर सुनने की जगहों पर बैठते थे। फिर अब जो कोई

يَسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ۙ﴿۹﴾ وَّاَنَّا

कान लगाता है, तो अपने लिए एक ताकने वाला अंगारा पाता है। और हम नहीं

لَا نَدْرِيْٓ اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ فِي الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ

जानते के क्या बुराई मन्ज़ूर है ज़मीन वालों के साथ या उन के रब ने उन के साथ

رَبُّهُمْ رَشَدًا ۙ﴿۱۰﴾ وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ

भलाई का इरादा किया है। और ये के हम में से कुछ अच्छे हैं और हम में से कुछ इस के

ذٰلِكَ ؕ كُنَّا طَرَآئِقَ قِدَدًا ۙ﴿۱۱﴾ وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ

अलावा हैं। हम अलग अलग तरीक़ों पर थे। और ये के हम ने गुमान किया के हम

لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِي الْاَرْضِ وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ۙ﴿۱۲﴾ وَّاَنَّا

अल्लाह को ज़मीन में हरगिज़ आजिज़ नहीं कर सकेंगे और भाग कर भी हरगिज़ उस को आजिज़ नहीं कर सकेंगे। और

لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰٓى اٰمَنَّا بِهٖ ؕ فَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِرَبِّهٖ

जब हम ने उस हिदायत को सुना तो हम उस पर ईमान ले आए। तो जो भी अपने रब पर ईमान ले आएगा,

فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ۙ﴿۱۳﴾ وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ

फिर उसे न नुक़सान का खौफ होगा, न ज़ुल्म का। और हम में से कुछ मुसलमान हैं

وَمِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ؕ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰٓئِكَ تَحَرَّوْا

और कुछ गुनहगार हैं। लेकिन जो इस्लाम लाएगा, तो उन्हों ने हिदायत का

رَشَدًا ﴿۱۴﴾ وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۙ﴿۱۵﴾

क़स्द किया। और अलबत्ता जो ज़ालिम हैं, तो वो जहन्नम का ईंधन हैं।

وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّآءً

और ये के अगर वो उस तरीक़े पर हमेशा चलते रेहते तो हम उन्हें पीने को वाफिर पानी

غَدَقًا ۙ﴿۱۶﴾ لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ

देते। ताके हम उन को इस में आज़माएं। और जो अपने रब की नसीहत से ऐराज़ करेगा

يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۙ﴿۱۷﴾ وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ

तो वो उसे चढ़ते अज़ाब में दाखिल कर देगा। और ये के मस्जिदें तो अल्लाह ही की हैं,

فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ۙ﴿۱۸﴾ وَّاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ

तो तुम अल्लाह के साथ किसी को मत पुकारो। और ये के जब अल्लाह का बन्दा खड़ा होता है

ع يَدۡعُوۡهُ كَادُوۡا يَكُوۡنُوۡنَ عَلَيۡهِ لِبَدًا ؕ﴿۱۹﴾ قُلۡ اِنَّمَاۤ

उसी को पुकारता है, तो क़रीब है के वो उन के खिलाफ़ जमा हो जाएं। आप फ़रमा दीजिए के मैं तो सिर्फ़

اَدۡعُوۡا رَبِّىۡ وَلَاۤ اُشۡرِكُ بِهٖۤ اَحَدًا ﴿۲۰﴾ قُلۡ اِنِّىۡ

अपने रब को पुकारता हूँ और मैं उस के साथ किसी को शरीक नहीं ठेहराता। आप फ़रमा दीजिए के मैं

لَاۤ اَمۡلِكُ لَـكُمۡ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا ﴿۲۱﴾ قُلۡ اِنِّىۡ

तुम्हारे लिए न ज़रर का इख़्तियार रखता हूँ और न हिदायत का। आप फ़रमा दीजिए के मुझे

لَنۡ يُّجِيۡرَنِىۡ مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ ۙ وَّلَنۡ اَجِدَ مِنۡ دُوۡنِهٖ

अल्लाह से हरगिज़ कोई नहीं बचा सकेगा। और उस को छोड़ कर मैं कोई पनाह लेने की जगह हरगिज़ नहीं

مُلۡتَحَدًا ۙ﴿۲۲﴾ اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِسٰلٰتِهٖ ؕ وَمَنۡ

पाऊँगा। मगर अल्लाह की तरफ से पैग़ाम पहोंचाना और उस के पैग़ामात को ले कर आना (ये अज़ाब से जाए पनाह है)। और

يَّعۡصِ اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيۡنَ

जो अल्लाह और उस के रसूल की मुखालफ़त करेगा, तो यक़ीनन उस के लिए जहन्नम की आग है जिस में वो

فِيۡهَاۤ اَبَدًا ؕ﴿۲۳﴾ حَتّٰٓى اِذَا رَاَوۡا مَا يُوۡعَدُوۡنَ فَسَيَعۡلَمُوۡنَ

हमेशा रहेंगे। यहाँ तक के जब वो देखेंगे उस (अज़ाब) को जिस से उन्हें डराया जा रहा है,

مَنۡ اَضۡعَفُ نَاصِرًا وَّاَقَلُّ عَدَدًا ﴿۲۴﴾ قُلۡ

तो उस वक़्त जान लेंगे के किस के मददगार कमज़ोर और तादाद में कम हैं। आप फ़रमा दीजिए के मैं

اِنۡ اَدۡرِىۡۤ اَقَرِيۡبٌ مَّا تُوۡعَدُوۡنَ اَمۡ يَجۡعَلُ لَهٗ

नहीं जानता के क्या क़रीब है वो जिस से तुम्हें डराया जा रहा है या उस के लिए मेरा रब कोई

رَبِّىۡۤ اَمَدًا ﴿۲۵﴾ عٰلِمُ الۡغَيۡبِ فَلَا يُظۡهِرُ عَلٰى غَيۡبِهٖۤ

मुद्दत मुक़र्रर करेगा। वो ग़ैब का जानने वाला है, फिर वो अपने ग़ैब पर किसी को मुत्तलेअ नहीं

اَحَدًا ۙ﴿۲۶﴾ اِلَّا مَنِ ارۡتَضٰى مِنۡ رَّسُوۡلٍ فَاِنَّهٗ

करता। मगर जिस रसूल को वो पसन्द कर ले, तो वो

يَسۡلُكُ مِنۡۢ بَيۡنِ يَدَيۡهِ وَمِنۡ خَلۡفِهٖ رَصَدًا ۙ﴿۲۷﴾

उस के आगे और उस के पीछे चौकीदार को चलाता है।

لِّيَـعۡلَمَ اَنۡ قَدۡ اَبۡلَغُوۡا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمۡ وَ اَحَاطَ

ताके जान ले के उन्हों ने अपने रब के पैग़ामात पहोंचा दिए और अल्लाह उन चीज़ों का इहाता

بِمَا لَدَيْهِمْ وَاَحْصٰى كُلَّ شَیْءٍ عَدَدًا ﴿٢٨﴾ ع

किए हुए है जो उन के आगे हैं और हर चीज़ की तादाद उस ने गिन रखी है।

اٰيَاتُهَا ٢٠ (٧٣) سُوْرَةُ الْمُزَّمِّلِ مَكِّيَّةٌ (٣) رُكُوْعَاتُهَا ٢

उस में २० आयतें हैं सूरह मुज़्ज़म्मिल मक्का में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يٰۤاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ﴿١﴾ قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٢﴾ نِّصْفَهٗۤ

ऐ चादर ओढ़ने वाले! आप रात में क़याम कीजिए मगर किसी रात। (क़याम करें)

اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا ﴿٣﴾ اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ

आधी रात या उस में से थोड़ी कम कर लीजिए। या उस पर थोड़ी ज़्यादा कर लीजिए और क़ुरआन

الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ﴿٤﴾ اِنَّا سَنُلْقِیْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا ﴿٥﴾

पाक को ठेहेर ठेहेर कर पढ़िए। अनक़रीब हम आप पर भारी क़ौल डालेंगे।

اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِیَ اَشَدُّ وَطْاً وَّاَقْوَمُ قِيْلًا ﴿٦﴾

यक़ीनन रात की इबादत वो (दिल व ज़बान में) ज़्यादा मुवाफ़क़त वाली है और ज़्यादा सीधी बात केहलाने वाली है।

اِنَّ لَكَ فِی النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ﴿٧﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ

यक़ीनन आप के लिए दिन में लम्बा मश्ग़ला है। और आप अपने रब के नाम को याद कीजिए और सब से कट कर उसी

وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ﴿٨﴾ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ

की तरफ मुन्क़तेअ हो जाइए। वो मशरिक़ और मग़रिब का रब है,

لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ﴿٩﴾ وَاصْبِرْ عَلٰى

उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तो उसी को कारसाज़ बनाइए। और आप सब्र कीजिए उन बातों पर जो

مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا ﴿١٠﴾ وَذَرْنِیْ

वो केहते हैं और उन को अच्छी तरह छोड़ दीजिए। और आप मुझे और

وَالْمُكَذِّبِيْنَ اُولِی النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا ﴿١١﴾ اِنَّ لَدَيْنَاۤ

खुशहाल झुठलाने वालों को छोड़ दीजिए और उन को थोड़ी मुहलत दीजिए। यक़ीनन हमारे पास

اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا ﴿١٢﴾ وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّ عَذَابًا

बेड़ियाँ हैं और दोज़ख है। और खाना है हलक़ में अटकने वाला और दर्दनाक

اَلِيۡمًا ﴿١٣﴾ يَوۡمَ تَرۡجُفُ الۡاَرۡضُ وَالۡجِبَالُ وَكَانَتِ
अज़ाब है। जिस दिन ज़मीन और पहाड़ लरज़ उठेंगे

الۡجِبَالُ كَثِيۡبًا مَّهِيۡلًا ﴿١٤﴾ اِنَّاۤ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلَيۡكُمۡ
और पहाड़ फिसलती हुई रेत का तौदा बन जाएंगे। यक़ीनन हम ने तुम्हारी तरफ पैग़म्बर

رَسُوۡلًا ۙ شَاهِدًا عَلَيۡكُمۡ كَمَاۤ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلٰى فِرۡعَوۡنَ
भेजा जो तुम पर गवाह है जैसा के हम ने फिरऔन की तरफ रसूल

رَسُوۡلًا ﴿١٥﴾ فَعَصٰى فِرۡعَوۡنُ الرَّسُوۡلَ فَاَخَذۡنٰهُ اَخۡذًا
भेजा। फिर फिरऔन ने उस रसूल की मुख़ालफ़त की, फिर हम ने मज़बूत गिरिफ़्त में उसे

وَّبِيۡلًا ﴿١٦﴾ فَكَيۡفَ تَتَّقُوۡنَ اِنۡ كَفَرۡتُمۡ يَوۡمًا
पकड़ लिया। अगर तुम ने कुफ़्र किया, तो फिर तुम कैसे बच सकोगे उस दिन

يَّجۡعَلُ الۡوِلۡدَانَ شِيۡبَا ﴿١٧﴾ ۖ السَّمَآءُ مُنۡفَطِرٌۢ بِهٖ ؕ
जो बच्चों को भी बूढ़ा कर देगा? आसमान उस दिन फट जाएगा।

كَانَ وَعۡدُهٗ مَفۡعُوۡلًا ﴿١٨﴾ اِنَّ هٰذِهٖ تَذۡكِرَةٌ ۚ فَمَنۡ
अल्लाह का वादा पूरा हो कर रहेगा। बेशक ये नसीहत है। फिर जो

شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيۡلًا ﴿١٩﴾ ع اِنَّ رَبَّكَ يَعۡلَمُ اَنَّكَ ع ١٩/١٤
चाहे वो अपने रब की तरफ़ रास्ता बना ले। यक़ीनन आप का रब खूब जानता है के आप

تَقُوۡمُ اَدۡنٰى مِنۡ ثُلُثَىِ الَّيۡلِ وَ نِصۡفَهٗ وَ ثُلُثَهٗ
क़याम करते हैं रात में दो तिहाई के क़रीब और आधी रात और सुलुस रात

وَ طَآئِفَةٌ مِّنَ الَّذِيۡنَ مَعَكَ ؕ وَاللّٰهُ يُقَدِّرُ الَّيۡلَ
और उन लोगों में से एक जमाअत भी जो आप के साथ हैं। और अल्लाह दिन और रात की मिक़दार मुतअय्यन

وَ النَّهَارَ ؕ عَلِمَ اَنۡ لَّنۡ تُحۡصُوۡهُ فَتَابَ عَلَيۡكُمۡ
करता है। उस ने जान लिया के तुम हरगिज़ उस को निबाह नहीं सकोगे तो अल्लाह ने तुम्हारी तौबा क़बूल की

فَاقۡرَءُوۡا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الۡقُرۡاٰنِ ؕ عَلِمَ اَنۡ سَيَكُوۡنُ
तो तुम पढ़ो कुरआन में से जो आसान हो। उस ने जान लिया के अनक़रीब

مِنۡكُمۡ مَّرۡضٰى ۙ وَاٰخَرُوۡنَ يَضۡرِبُوۡنَ فِى الۡاَرۡضِ
तुम में से कुछ बीमार होंगे और दूसरे ज़मीन में सफर करेंगे

يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ ۙ وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ
अल्लाह का फ़ज़्ल तलब करने के लिए। और दूसरे क़िताल करेंगे

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَاَقِيْمُوا
अल्लाह के रास्ते में। तो तुम कुरआन में से पढ़ो जो आसान हो और तुम नमाज़

الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَ اَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ۭ
क़ाइम करो और ज़कात दो और अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दो।

وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ
और जो भलाई तुम अपनी जानों के लिए आगे भेजोगे, तो उस को अल्लाह के पास

اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَّ اَعْظَمَ اَجْرًا ۭ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ۭ
पाओगे, वो बेहतर है और अज्र के ऐतेबार से बड़ा है। और तुम अल्लाह से मग़फिरत तलब करो,

اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ؓ ٢٠ ع
यक़ीनन अल्लाह बहोत ज़्यादा बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

رُكُوْعَاتُهَا ٢ (٤) سُوْرَةُ الْمُدَّثِّرِ مَكِّيَّةٌ (٧٤) اٰيَاتُهَا ٥٦

और २ रूकूअ हैं सूरह मुद्दस्सिर मक्का में नाज़िल हुई उस में ५६ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۙ ١ قُمْ فَاَنْذِرْ ۙ ٢ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۙ ٣
ऐ चादर में लिपटने वाले! आप खड़े हो जाइए, फिर डराइए। और अपने रब की बड़ाई बयान कीजिए।

وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۙ ٤ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۙ ٥ وَلَا تَمْنُنْ
और अपने कपड़े पाक रखिए। और गन्दगी से अलग रहिए। और आप एहसान इस लिए न कीजिए के आप

تَسْتَكْثِرُ ۙ ٦ وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۭ ٧ فَاِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُوْرِ ۙ ٨
ज़्यादा का मुतालबा करें। और अपने रब की वजह से सब्र कीजिए। फिर जब सूर फूंका जाएगा।

فَذٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَّوْمٌ عَسِيْرٌ ۙ ٩ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ
तो ये दिन बड़ा सख़्त होगा। काफ़िरों पर कुछ आसान

يَسِيْرٍ ١٠ ذَرْنِيْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا ۙ ١١ وَّجَعَلْتُ
नहीं होगा। मुझे और उस को जिसे मैं ने पैदा किया, तन्हा छोड़ दीजिए। और मैं ने

لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا ۙ﴿۱۲﴾ وَّبَنِيْنَ شُهُوْدًا ۙ﴿۱۳﴾ وَّ مَهَّدْتُّ لَهٗ

उस को अता किया बहोत सारा माल। और हाज़िर रेहने वाले बेटे बनाए। और मैं ने उस को हर चीज़ में

تَمْهِيْدًا ۙ﴿۱۴﴾ ثُمَّ يَطْمَعُ اَنْ اَزِيْدَ ۙ﴿۱۵﴾ كَلَّا ؕ اِنَّهٗ

वुस्अत दी। फिर वो लालच रखता है के मैं मज़ीद दूँ। हरगिज़ नहीं! यक़ीनन वो

كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ؕ﴿۱۶﴾ سَاُرْهِقُهٗ صَعُوْدًا ؕ﴿۱۷﴾ اِنَّهٗ

हमारी आयतों के साथ दुशमनी रखने वाला था। अनक़रीब मैं उसे कठिन चढ़ाई पर चढ़ने पर मजबूर करूंगा। उस ने

فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۙ﴿۱۸﴾ فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۙ﴿۱۹﴾ ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ

सोचा और एक अन्दाज़ा लगाया। तो वो मारा जाए के कैसा उस ने अन्दाज़ा लगाया। फिर वो मारा जाए के कैसा उस ने

قَدَّرَ ۙ﴿۲۰﴾ ثُمَّ نَظَرَ ۙ﴿۲۱﴾ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ۙ﴿۲۲﴾ ثُمَّ اَدْبَرَ

अन्दाज़ा लगाया। फिर उस ने देखा। फिर उस ने मुंह बनाया और फिर उस ने मुंह बिगाड़ा। फिर उस ने पीठ

وَ اسْتَكْبَرَ ۙ﴿۲۳﴾ فَقَالَ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ يُّؤْثَرُ ۙ﴿۲۴﴾

फेरी और फिर उस ने तकब्बुर किया। फिर उस ने कहा के ये तो नहीं है मगर जादू जो मन्क़ूल चला आ रहा है।

اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ؕ﴿۲۵﴾ سَاُصْلِيْهِ سَقَرَ ﴿۲۶﴾

ये तो एक इन्सान ही का कलाम है। अनक़रीब मैं उसे दोज़ख में दाखिल करूँगा।

وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا سَقَرُ ؕ﴿۲۷﴾ لَا تُبْقِيْ وَلَا تَذَرُ ۚ﴿۲۸﴾ لَوَّاحَةٌ

और आप को मालूम भी है के सक़र क्या है? वो आग न बाक़ी रेहने देगी और न कोई चीज़ छोड़ेगी। वो तो शक्ले इन्सानी

لِّلْبَشَرِ ۚۖ﴿۲۹﴾ عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ؕ﴿۳۰﴾ وَمَا جَعَلْنَاۤ اَصْحٰبَ

को बिगाड़ कर रख देगी। उस दोज़ख पर उन्नीस फ़रिशते हैं। और हम ने दोज़ख वालों को नहीं

النَّارِ اِلَّا مَلٰٓئِكَةً ۙ وَّمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ

बनाया मगर फ़रिशते। और हम ने उन की तादाद को काफिरों

اِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۙ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا

के लिए सिर्फ़ फ़ितना बनाया ताके वो लोग यक़ीन करें जिन को किताब

الْكِتٰبَ وَيَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ

दी गई और ईमान वाले ईमान में और बढ़ें और शक न करें

الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۙ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ

वो जिन को किताब दी गई और शक न करें ईमान वाले और ताके वो लोग कहें

فِیْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّ الْكٰفِرُوْنَ مَاذَاۤ اَرَادَ اللّٰهُ
जिन के दिलों में बीमारी है और काफ़िर कहें के अल्लाह ने उस के ज़रिए मिसाल बयान कर के किस चीज़ का इरादा किया है?

بِهٰذَا مَثَلًا ؕ كَذٰلِكَ یُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ یَّشَآءُ
इसी तरह अल्लाह गुमराह करते हैं जिसे चाहते हैं

وَ یَهْدِیْ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَمَا یَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ
और हिदायत देते हैं जिसे चाहते हैं। और तेरे रब के लशकर सिर्फ़

اِلَّا هُوَ ؕ وَمَا هِیَ اِلَّا ذِكْرٰی لِلْبَشَرِ ۳۱ كَلَّا وَالْقَمَرِ ۳۲ ع ۱ ۳۱ ۱۵
वही जानता है। और ये महज़ एक नसीहत है इन्सानों के लिए। हरगिज़ नहीं! चाँद की क़सम।

وَالَّیْلِ اِذْ اَدْبَرَ ۳۳ وَالصُّبْحِ اِذَاۤ اَسْفَرَ ۳۴ اِنَّهَا لَاِحْدَی
और रात की क़सम, जब वो चली जाए। सुबह की क़सम, जब वो रोशन हो जाए। यक़ीनन ये बड़ी निशानियों में से

الْكُبَرِ ۳۵ نَذِیْرًا لِّلْبَشَرِ ۳۶ لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ
एक है। और ये इन्सानों को डराने वाली है। उस को जो तुम में से ये चाहे

اَنْ یَّتَقَدَّمَ اَوْ یَتَاَخَّرَ ۳۷ كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ رَهِیْنَةٌ ۳۸
के आगे बढ़े या पीछे हटे। हर शख़्स रोका जाएगा उन आमाल की वजह से जो उस ने किए।

اِلَّاۤ اَصْحٰبَ الْیَمِیْنِ ۳۹ فِیْ جَنّٰتٍ ۛ یَتَسَآءَلُوْنَ ۴۰ معانقة ۱۲ عند المتأخرین ۱۲
सिवाए यमीन वालों के। जो जन्नतों में होंगे, एक दूसरे को पूछ रहे होंगे।

عَنِ الْمُجْرِمِیْنَ ۴۱ مَا سَلَكَكُمْ فِیْ سَقَرَ ۴۲ قَالُوْا
मुजरिमों के मुतअल्लिक़। (मुजरिमों से पूछेंगे) के तुम्हें दोज़ख में किस चीज़ ने दाखिल किया? तो वो कहेंगे के

لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّیْنَ ۴۳ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِیْنَ ۴۴
हम नमाज़ पढ़ने वालों में से नहीं थे। और हम मिस्कीन को खाना नहीं देते थे।

وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِیْنَ ۴۵ وَكُنَّا نُكَذِّبُ
और हम बातिल कलाम में लगने वालों के साथ लगे रेहते थे। और हम हिसाब

بِیَوْمِ الدِّیْنِ ۴۶ حَتّٰۤی اَتٰىنَا الْیَقِیْنُ ۴۷
के दिन को झुठलाते थे। यहाँ तक के हमारे पास यक़ीन (यानी मौत) आ गई।

فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِیْنَ ۴۸ فَمَا لَهُمْ عَنِ
फिर तो उन को सिफारिश करने वालों की सिफारिश नफा नहीं देगी। फिर उन को क्या हुवा के नसीहत

التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِينَ ﴿٤٩﴾ كَأَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ﴿٥٠﴾

से ऐराज़ कर रहे हैं। गोया के वो बिदके हुए गधे हैं।

فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ﴿٥١﴾ بَلْ يُرِيدُ كُلُّ امْرِئٍ

जो शेर से भागे हों। बल्के उन में से हर शख्स ये

مِّنْهُمْ أَنْ يُؤْتَىٰ صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ﴿٥٢﴾ كَلَّا ۖ بَلْ

चाहता है के उसे खुले हुए सहीफे दिए जाएं। हरगिज़ नहीं! बल्के

لَّا يَخَافُونَ الْآخِرَةَ ﴿٥٣﴾ كَلَّا إِنَّهُ تَذْكِرَةٌ ﴿٥٤﴾ فَمَنْ

वो आख़िरत से डरते नहीं हैं। हरगिज़ नहीं! यक़ीनन क़ुरआन तो नसीहत है। फिर जो

شَاءَ ذَكَرَهُ ﴿٥٥﴾ وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ

चाहे उस से नसीहत हासिल करे। और वो नसीहत हासिल नहीं कर सकते मगर ये के अल्लाह चाहे।

هُوَ أَهْلُ التَّقْوَىٰ وَأَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ﴿٥٦﴾

वो तक़्वा का अहल है और बख़्शने का अहल है।

آيَاتُهَا ٤٠ (٧٥) سُورَةُ الْقِيَامَةِ مَكِّيَّةٌ (٣١) رُكُوعَاتُهَا ٢

और २ रूकूअ हैं सूरह क़ियामह मक्का में नाज़िल हुई उस में ४० आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

لَا أُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيَامَةِ ﴿١﴾ وَلَا أُقْسِمُ بِالنَّفْسِ

क़सम खाता हूँ क़यामत के दिन की। और क़सम खाता हूँ मलामत करने वाले

اللَّوَّامَةِ ﴿٢﴾ أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَلَّنْ نَجْمَعَ عِظَامَهُ ﴿٣﴾

नफ्स की। क्या इन्सान ने ये समझ रखा है के हम उस की हड्डियाँ हरगिज़ जमा नहीं करेंगे?

بَلَىٰ قَادِرِينَ عَلَىٰ أَنْ نُسَوِّيَ بَنَانَهُ ﴿٤﴾ بَلْ يُرِيدُ

क्यूं नहीं! हम इस पर क़ादिर हैं के उस के पोरे भी दुरुस्त कर दें। बल्के इन्सान

الْإِنْسَانُ لِيَفْجُرَ أَمَامَهُ ﴿٥﴾ يَسْأَلُ أَيَّانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ ﴿٦﴾

ये चाहता है के आगे भी वो बदकारी करता रहे। वो पूछता है के क़यामत का दिन कब है?

فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ﴿٧﴾ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ﴿٨﴾ وَجُمِعَ الشَّمْسُ

फिर जब निगाहें फटी रेह जाएं। और चाँद बेनूर हो जाए। और चाँद और सूरज इकट्ठे

وَالۡقَمَرُۙ‏ ﴿٩﴾ يَقُوۡلُ الۡاِنۡسَانُ يَوۡمَٮِٕذٍ اَيۡنَ الۡمَفَرُّۚ‏ ﴿١٠﴾
किए जाएं। इन्सान उस दिन कहेगा के किधर भागूँ?

كَلَّا لَا وَزَرَؕ‏ ﴿١١﴾ اِلٰى رَبِّكَ يَوۡمَٮِٕذِ ۨالۡمُسۡتَقَرُّ ؕ‏ ﴿١٢﴾
हरगिज़ नहीं! कोई जाए पनाह नहीं। तेरे रब की तरफ़ उस दिन ठेहेरना है।

يُنَبَّؤُا الۡاِنۡسَانُ يَوۡمَٮِٕذٍۢ بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ؕ‏ ﴿١٣﴾
इन्सान को खबर दी जाएगी उस दिन उन आमाल की जो उस ने आगे भेजे और पीछे छोड़े।

بَلِ الۡاِنۡسَانُ عَلٰى نَفۡسِهٖ بَصِيۡرَةٌ ۙ‏ ﴿١٤﴾ وَّلَوۡ اَلۡقٰى مَعَاذِيۡرَهٗ ؕ‏ ﴿١٥﴾
बल्के इन्सान अपने खिलाफ खुद हुज्जत है। अगर्चे वो अपने बहाने पेश करे।

لَا تُحَرِّكۡ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعۡجَلَ بِهٖ ؕ‏ ﴿١٦﴾ اِنَّ عَلَيۡنَا جَمۡعَهٗ
आप अपनी ज़बान कुरआन के साथ न हिलाएं ताके उस में आप जल्दी करें। हमारे ज़िम्मे उस कुरआन का जमा करना

وَقُرۡاٰنَهٗ ۖ ۚ‏ ﴿١٧﴾ فَاِذَا قَرَاۡنٰهُ فَاتَّبِعۡ قُرۡاٰنَهٗ ۚ‏ ﴿١٨﴾ ثُمَّ
और उस का पढ़वाना भी है। फिर जब हम उस को पढ़ लें, फिर बाद में आप पढ़िए। फिर

اِنَّ عَلَيۡنَا بَيَانَهٗ ؕ‏ ﴿١٩﴾ كَلَّا بَلۡ تُحِبُّوۡنَ الۡعَاجِلَةَ ۙ‏ ﴿٢٠﴾ وَتَذَرُوۡنَ
यक़ीनन हमारे ज़िम्मे उस को बयान करना भी है। हरगिज़ नहीं! बल्के तुम दुन्या से महब्बत रखते हो। और आख़िरत

الۡاٰخِرَةَ ؕ‏ ﴿٢١﴾ وُجُوۡهٌ يَّوۡمَٮِٕذٍ نَّاضِرَةٌ ۙ‏ ﴿٢٢﴾ اِلٰى رَبِّهَا
को छोड़ देते हो। कुछ चेहरे उस दिन तर व ताज़ा होंगे। अपने रब की तरफ़ देख रहे

نَاظِرَةٌ ۚ‏ ﴿٢٣﴾ وَ وُجُوۡهٌ يَّوۡمَٮِٕذٍۢ بَاسِرَةٌ ۙ‏ ﴿٢٤﴾ تَظُنُّ
होंगे। और कुछ चेहरे उस दिन उदास होंगे। गुमान करते होंगे के उन

اَنۡ يُّفۡعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ؕ‏ ﴿٢٥﴾ كَلَّاۤ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِىَ ۙ‏ ﴿٢٦﴾
के साथ कमर तोड़ने वाले का मुआमला किया जाएगा। हरगिज़ नहीं! जब रूह हलक़ तक पहोंच जाए।

وَقِيۡلَ مَنۡ ۜ رَاقٍ ۙ‏ ﴿٢٧﴾ وَّظَنَّ اَنَّهُ الۡفِرَاقُ ۙ‏ ﴿٢٨﴾ وَالۡتَفَّتِ
और पूछा जाए के है कोई रूक़्या करने वाला। और वो गुमान करता है के ये तो जुदाई का वक्त है। और पिंडली

السَّاقُ بِالسَّاقِ ۙ‏ ﴿٢٩﴾ اِلٰى رَبِّكَ يَوۡمَٮِٕذِ ۨالۡمَسَاقُ ؕ‏ ﴿٣٠﴾ ع
पिंडली के साथ लिपट जाए। तेरे रब ही की जानिब उस दिन चलना है।

فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ۙ‏ ﴿٣١﴾ وَلٰـكِنۡ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۙ‏ ﴿٣٢﴾
फिर उस ने न तस्दीक़ की और न नमाज़ पढ़ी। लेकिन उस ने झुठलाया और मुंह मोड़ा।

ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰۤى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰىؕ۝۳۳ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰىۙ۝۳۴ ثُمَّ اَوْلٰى

फिर वो गया अपने घर वालों की तरफ अकड़ता हुवा। तेरे लिए हलाकत हो, फिर हलाकत हो। फिर तेरे

لَكَ فَاَوْلٰىؕ۝۳۵ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ سُدًىؕ۝۳۶

लिए हलाकत हो, फिर हलाकत हो। क्या इन्सान ने ये समझ रखा है के उसे बेकार छोड़ दिया जाएगा?

اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰىۙ۝۳۷ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً

क्या वो मनी का एक नुत्फ़ा नहीं था जो टपकाया जाता है? फिर जमा हुवा खून था, फिर अल्लाह ने

فَخَلَقَ فَسَوّٰىۙ۝۳۸ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ

बनाया, फिर दुरुस्त किया, फिर उस से जोड़ा बनाया एक मर्द

وَالْاُنْثٰىؕ۝۳۹ اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰۤى اَنْ يُّحْیِۦَ الْمَوْتٰى۝۴۰

ع ۱۸

और एक औरत को। क्या वो अल्लाह इस पर क़ादिर नहीं है के मुर्दों को ज़िन्दा करे?

اٰیَاتُهَا ۳۱ (۷۶) سُوْرَةُ الدَّهْرِ مَدَنِيَّةٌ (۹۸) رُكُوْعَاتُهَا ۲

उस में ३१ आयतें हैं सूरह दह्र मदीना में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ

बेशक इन्सान पर ज़माने में एक वक्त ऐसा भी आया है के वो क़ाबिले ज़िक्र

شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا۝۱ اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ

चीज़ नहीं था। यक़ीनन हम ने इन्सान को मखलूत नुत्फ़े से पैदा

اَمْشَاجٍ ۖۗ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا۝۲ اِنَّا هَدَيْنٰهُ

किया, के हम उस को आज़माएं, फिर हम ने उसे सुनने वाला, देखने वाला बनाया। बेशक हम ने उस को रास्ता

السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوْرًا۝۳ اِنَّاۤ اَعْتَدْنَا

बतलाया, या शुक्र करने वाला हुवा या नाशुकरा। यक़ीनन हम ने काफ़िरों

لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَا۟ وَاَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا۝۴ اِنَّ الْاَبْرَارَ

के लिए ज़न्जीरें और तौक़ और आग तय्यार कर रखी हैं। यक़ीनन नेक लोग

يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا۝۵ عَيْنًا

पिएंगे ऐसे जाम से जिस में काफ़ूर की आमेज़िश होगी। एक चशमे से

يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ۝٦ يُوْفُوْنَ

जिस से अल्लाह के मखसूस बन्दे पिएंगे (और वो जहाँ चाहेंगे) उसे बहा ले जाएंगे। जो नज़र

بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ۝٧

पूरी करते हैं और डरते हैं उस दिन से जिस की मुसीबत फैली हुई होगी।

وَ يُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّ يَتِيْمًا

और जो खाना देते हैं उस की महब्बत के बावजूद मिस्कीन और यतीम

وَّ اَسِيْرًا ۝٨ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ

और क़ैदी को। के हम तुम्हें सिर्फ अल्लाह की रज़ा की खातिर खाना देते हैं, हम तुम से न बदला

جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ۝٩ اِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا

चाहते हैं और न शुक्रिया चाहते हैं। हम तो अपने रब से डरते हैं उस दिन से

عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ۝١٠ فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ

जो उदासी वाला और सख्त दिन होगा। तो अल्लाह उन को उस दिन की मुसीबत से बचा लेंगे

وَلَقّٰىهُمْ نَضْرَةً وَّ سُرُوْرًا ۝١١ وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا

और उन को अल्लाह ताज़गी और खुशी अता करेंगे। और उन के सब्र के बदले उन को

جَنَّةً وَّ حَرِيْرًا ۝١٢ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ

जन्नत और रेशम इनायत फरमाएंगे। उस में वो टेक लगाए हुए होंगे तख्तों पर।

لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ۝١٣ وَ دَانِيَةً

उस में न वो धूप देखेंगे और न सरदी। और फलदार शाखों के

عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَ ذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ۝١٤

साए उन के क़रीब होंगे और फलों के गुच्छे झुके हुए ताबेअ होंगे।

وَ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ

और उन पर चाँदी के बरतन घुमाए जाएंगे और प्याले

كَانَتْ قَوَارِيْرَا۠ ۝١٥ قَوَارِيْرَا۠ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا

जो शीशे के होंगे। चाँदी के शीशे से होंगे, जिन को भरने वाले ने एक मुअय्यन मिक़दार

تَقْدِيْرًا ۝١٦ وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا

से भरा होगा। और उन को उस में ऐसे जाम पिलाए जाएंगे जिन में सूंठ की आमेज़िश

۱۵ قرء حفص بغير الالف في الوصل فيهما ووقف على الاول بالالف وعلى الثاني بغير الالف ١٢

زَنْجَبِیْلًا ۱۷ عَیْنًا فِیْهَا تُسَمّٰی سَلْسَبِیْلًا ۱۸

होगी। जन्नत के एक चशमे से जिस का नाम सलसबील है।

وَ یَطُوْفُ عَلَیْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَیْتَهُمْ

और उन पर लड़के चक्कर लगाएंगे जो लड़के ही रहेंगे। जब आप उन को देखोगे तो आप

حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ۱۹ وَ اِذَا رَاَیْتَ ثَمَّ رَاَیْتَ

उन्हें बिखेरे हुए मोती गुमान करोगे। और जब आप उस जगह को देखोगे तो

نَعِیْمًا وَّ مُلْكًا كَبِیْرًا ۲۰ عٰلِیَهُمْ ثِیَابُ سُنْدُسٍ

नेअमत वाली जगह और एक बड़ी सल्तनत देखोगे। उन पर बारीक और मोटे सब्ज़

خُضْرٌ وَّ اِسْتَبْرَقٌ ۫ وَّ حُلُّوْۤا اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَ سَقٰىهُمْ

रेशम का लिबास होगा। और उन्हें चाँदी के कंगन पेहनाए जाएंगे। और उन को

رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ۲۱ اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً

उन का रब पाकीज़ा शराब पिलाएगा। ये तुम्हारा सवाब है

ع ۱ ۲۲ ۱۹ وَّ كَانَ سَعْیُكُمْ مَّشْكُوْرًا ۲۲ ۧ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَیْكَ

और तुम्हारी कोशिश की क़दर की गई है। हम ने आप पर ये कुरआन थोड़ा थोड़ा

الْقُرْاٰنَ تَنْزِیْلًا ۲۳ ۚ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَ لَا تُطِعْ

नाज़िल किया है। इस लिए आप अपने रब के हुक्म की वजह से सब्र कीजिए और उन में से

مِنْهُمْ اٰثِمًا اَوْ كَفُوْرًا ۲۴ ۚ وَ اذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً

किसी गुनहगार या बहोत नाशुकरे का केहना न मानिए। और अपने रब के नाम का ज़िक्र कीजिए सुबह

وَّ اَصِیْلًا ۲۵ ۚ وَ مِنَ الَّیْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَ سَبِّحْهُ

और शाम। और रात के किसी वक्त में उस के सामने सज्दा कीजिए और लम्बी रात

لَیْلًا طَوِیْلًا ۲۶ اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ یُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ

में उस की तस्बीह कीजिए। यक़ीनन ये लोग दुन्या चाहते हैं

وَ یَذَرُوْنَ وَرَآءَهُمْ یَوْمًا ثَقِیْلًا ۲۷ نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ

और अपने पीछे एक भारी दिन को छोड़ देते हैं। हमीं ने उन को पैदा किया

وَ شَدَدْنَاۤ اَسْرَهُمْ ۚ وَ اِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَاۤ اَمْثَالَهُمْ

और उन के बन्धन को मज़बूत किया है। और हम जब चाहें उन के जैसे बदले में

تَبْدِیْلًا ﴿٢٨﴾ اِنَّ ھٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ

ले आएं। यक़ीनन ये नसीहत है। फिर जो चाहे

اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِیْلًا ﴿٢٩﴾ وَمَا تَشَآءُوْنَ

अपने रब की तरफ़ रास्ता बना ले। और तुम नहीं चाहोगे

اِلَّاۤ اَنْ یَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِیْمًا حَكِیْمًا ﴿٣٠﴾

मगर ये के अल्लाह ही चाहे। यक़ीनन अल्लाह इल्म वाला, हिक्मत वाला है।

یُّدْخِلُ مَنْ یَّشَآءُ فِیْ رَحْمَتِهٖ ؕ وَ الظّٰلِمِیْنَ

वो अपनी रहमत में जिसे चाहे दाख़िल करता है। और ज़ालिमों

اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِیْمًا ﴿٣١﴾ ع

के लिए उस ने दर्दनाक अज़ाब तय्यार कर रखा है।

اٰیَاتُهَا ٥٠ (٧٧) سُوْرَةُ الْمُرْسَلٰتِ مَكِّیَّةٌ (٣٣) رُكُوْعَاتُهَا ٢

उस में ५० आयतें हैं सूरह मुरसलात मक्का में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَ الْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ﴿١﴾ فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ﴿٢﴾

उन हवाओं की क़सम जो नफे के लिए भेजी जाती हैं। फिर उन हवाओं की क़सम जो तेज़ चलने वाली हैं।

وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ﴿٣﴾ فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ﴿٤﴾

उन हवाओं की क़सम जो बादलों को फैलाने वाली हैं। फिर उन हवाओं की क़सम जो बादलों को अलग अलग करने वाली

فَالْمُلْقِیٰتِ ذِكْرًا ﴿٥﴾ عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ﴿٦﴾

हैं। फिर उन हवाओं की क़सम जो अल्लाह की याद दिल में डालने वाली हैं। उज़्र के लिए या डराने के लिए।

اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ﴿٧﴾ فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ﴿٨﴾

तुम्हें जिस से डराया जा रहा है, वो अलबत्ता ज़रूर वाक़ेअ होने वाला है। फिर जब सितारे बेनूर हो जाएंगे।

وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ﴿٩﴾ وَ اِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ﴿١٠﴾

और जब आसमान फट जाएगा। और जब पहाड़ गुबार बना कर उड़ा दिए जाएंगे।

وَ اِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ ﴿١١﴾ لِاَیِّ یَوْمٍ اُجِّلَتْ ﴿١٢﴾

और जब पैग़म्बर इकठ्ठे किए जाएंगे। किस दिन के लिए उसे मुअख़्ख़र किया गया?

لِيَوْمِ الْفَصْلِ ۝۱۳ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۝۱۴

फ़ैसले के दिन के लिए। और आप को मालूम है के फ़ैसले का दिन क्या है?

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝۱۵ اَلَمْ نُهْلِكِ الْاَوَّلِيْنَ ۝۱۶

उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है। क्या हम ने हलाक नहीं किया अगले लोगों को?

ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِيْنَ ۝۱۷ كَذٰلِكَ نَفْعَلُ

फिर हम उन के पीछे चलता करेंगे पीछे आने वालों को। इसी तरह हम मुजरिमों

بِالْمُجْرِمِيْنَ ۝۱۸ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝۱۹

के साथ करते हैं। उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है।

اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۝۲۰ فَجَعَلْنٰهُ فِيْ قَرَارٍ

क्या हम ने तुम्हें पैदा नहीं किया एक ज़लील पानी से? फिर हम ने उस को महफ़ूज़ ठेहेरने की जगह में

مَّكِيْنٍ ۝۲۱ اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ۝۲۲ فَقَدَرْنَا ۖ فَنِعْمَ

रखा। एक वक़्ते मुक़र्ररा तक। फिर हम ने मिक़दार मुतअय्यन की। फिर हम कितनी अच्छी

الْقٰدِرُوْنَ ۝۲۳ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝۲۴

मिक़दार मुतअय्यन करने वाले हैं। उस दिन हलाकत है झुठलाने वालों के लिए।

اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ۝۲۵ اَحْيَآءً وَّاَمْوَاتًا ۝۲۶

क्या हम ने ज़मीन को समेटने वाली नहीं बनाया? ज़िन्दों और मुर्दों को।

وَّجَعَلْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ شٰمِخٰتٍ وَّ اَسْقَيْنٰكُمْ مَّآءً

और हम ने उस में ऊँचे ऊँचे पहाड़ गाड़ दिए और हम ने तुम्हें मीठा पानी पीने

فُرَاتًا ۝۲۷ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝۲۸ اِنْطَلِقُوْٓا

को दिया। उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है। (कहा जाएगा)

اِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝۲۹ اِنْطَلِقُوْٓا

के तुम चलो उस अज़ाब की तरफ़ जिस को तुम झुठलाते थे। तुम चलो

اِلٰى ظِلٍّ ذِيْ ثَلٰثِ شُعَبٍ ۝۳۰ لَّا ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِيْ

तीन शाख़ों वाले साए की तरफ़। जो न साया देने वाला है और न आग की तपिश

مِنَ اللَّهَبِ ۝۳۱ اِنَّهَا تَرْمِيْ بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ۝۳۲

के कुछ काम आ सकता है। यक़ीनन वो तो अंगारे फैंकती है महल जैसे।

كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ﴿٣٣﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٤﴾

गोया के वो पीले पीले ऊँट हैं। उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है।

هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ ﴿٣٦﴾

ये वो दिन है के वो बोल नहीं सकेंगे। और उन को इजाज़त भी नहीं दी जाएगी के वो उज़्र पेश करें।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٧﴾ هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۚ

उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है। ये फ़ैसले का दिन है।

جَمَعْنٰكُمْ وَالْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٨﴾ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ

हम ने तुम्हें और अगले लोगों को जमा कर दिया। फिर अगर तुम्हारे पास कोई दाव है

فَكِيْدُوْنِ ﴿٣٩﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٠﴾ ع ١٢ ٢١ ١

तो मुझ पर चला लो। उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ ظِلٰلٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٤١﴾ وَّ فَوَاكِهَ

यक़ीनन मुत्तक़ी लोग सायों और चशमों, और मेवों में होंगे,

مِمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٤٢﴾ كُلُوْا وَ اشْرَبُوْا هَنِيْٓـئًا ۢ بِمَا كُنْتُمْ

जिस क़िस्म के वो चाहेंगे। मुबारक हो, तुम खाओ और पियो उन आमाल के बदले में जो तुम

تَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٤٤﴾

करते थे। इसी तरह हम नेकी करने वालों को बदला देंगे।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٥﴾ كُلُوْا وَ تَمَتَّعُوْا

उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है। तुम खाओ और थोड़ा मज़ा

قَلِيْلًا اِنَّكُمْ مُّجْرِمُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ

ले लो, यक़ीनन तुम मुजरिम हो। उस दिन झुठलाने वालों के लिए

لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمُ ارْكَعُوْا

हलाकत है। और जब उन से कहा जाता है के तुम रूकूअ करो

لَا يَرْكَعُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٩﴾

तो ये रूकूअ नहीं करते। उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है।

فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ ۢ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٠﴾ ع ١٠ ٢٢ ٢

फिर इस के बाद कौन सी बात पर वो ईमान लाएंगे।